GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

बाल साहित्य में जेंडर : 'लाखों में एक' उपन्यास में परिवार के लिए संघर्षशील बेटी

आर. सरोजिनी
शोधार्थी (हिन्दी विभाग) गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान(मानित विश्वविद्यालय),
गांधीग्राम, तमिलनाडु
sarojiniravi8@gmail.com 7448351839

शोध-सार

प्रस्तुत शोष आलेख में बच्चों की कहानियों में चित्रित, बच्चों के बीच लैंगिक असमानता के आकृति को दिखाने की कोशिश करता है। कहानी सुनाना दुनिया भर में रहने वाले अधिकांश बच्चों का जीवन का एक हिस्सा है। हर बच्चे को नैतिकता, सच्चाई और वास्तविक दुनिया के बारे में भी सिखाया जाता है। कहानियाँ वास्तविक दुनिया को देखने के लिए एक खिड़की की तरह काम करती हैं। कहानियाँ आम तौर पर दोस्ती, परिवार, प्यार और कई अन्य विषयों जैसे बहुत सारे सामान्य विषयों से निपटती हैं। दूसरी ओर, हमारे पास लैंगिक असमानता, घृणा, लिंग दोषारोपण, वीर नायक, कमजोर महिलाएँ आदि बच्चों की काल्पनिक कहानियों में निहित हैं। हालाँकि समय के साथ, जागरूकता का स्तर बढ़ा है और आज लोग इसका पालन घर पर नहीं करने पर अधिक जागरूक हैं। लेकिन वास्तव में जब परिवार में वित्तीय संकट की बात आती है, तो लड़कियाँ दर्द और जलन को झेलती हैं।

बीज शब्द : मध्यवर्गीय परिवार, आर्थिक तंगी, सुविधा, सहारा, शिक्षा, जिम्मेदारी, आवश्यकता, परिवार, आर्थिक स्थिति, सहायता, उपेक्षा, दोस्त।

प्रस्तावना

बच्चों के जीवन में कहानियाँ बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे उन्हें दुनिया को समझने और खुद को बनाने में मदद करती हैं। पंचतंत्र और अकबर-बीरबल जैसी कहानियाँ बच्चों को जीवन के नैतिक मूल्यों को परिभाषित करती हैं, उनकी संस्कृति का प्रतिनिधित्व और उन्हें दूसरों की भावनाओं को समझना भी सिखाती हैं। इससे उनकी कल्पना, रचनात्मकता, सांस्कृतिक समझ, सुनने के कौशल, नैतिक विकास, स्मृति और जिज्ञासा में भी सुधार होता है। इस तरह की कहानियाँ उनकी रचनात्मकता

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

को प्रोत्साहित करती हैं और इस तरह उनके आत्मविश्वास और संचार और सामाजिक कौशल को बढ़ाती हैं।

"अधिकांश कहानियाँ दोस्ती, परिवार, साहस, सामाजिक जीवन, हानि और दुःख, पीड़ा, सम्मिलित काररवाई और स्वीकृति से संबंधित हैं।"[1] इस तरह की चीजें माता-पिता और बच्चे के बंधन को और भी मजबूत बनाती हैं और मस्तिष्क के विकास में भी सुधार करती हैं। "ऐसी कहानियाँ अपनी समृद्ध संस्कृति का जश्न मनाने, एक साथ काम करने, उन पर विश्वास करने, कल्पना की खोज करने और समाज के बीच सामाजिक कौशल को मजबूत करने के महत्व को बढ़ावा देती हैं। इस प्रकार अन्य चंचल तत्वों को शामिल करके, यह निश्चित रूप से युवा पाठकों को आश्चर्यचकित और प्रसन्न करेगा।"[2] विभिन्न विषय-वस्तुओं को शामिल करके और ऐसे दिलचस्प तत्वों को जोड़कर बच्चों का दुनिया भर में मनोरंजन किया जा सकता है।

लैंगिक असमानता एक जानी-मानी विषय है, लेकिन इसका बहुत बड़ा प्रभाव है। भारतीय सरकार ने किसी भी रूप में लैंगिक असमानता का स्वीकार नहीं किया है। लेकिन सभी नीतियों, मानदंडों और रीति-रिवाजों का निरीक्षण होने पर भी महिलाओं को बचपन से ही समस्याएँ होती हैं। हालाँकि हम अपने समाज में अच्छे के लिए तेज़ी से बढ़ते हुए देख सकते हैं। लेकिन लड़कियों और लड़कों दोनों का जीवन उनके जन्म के समय से ही अलग है। लड़कियों पर बहुत सारी पाबंदियाँ होती हैं, लेकिन लड़कों को शिक्षा, काम और अन्य तरह के अवसरों के लिए स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति होती है। इस तरह की परवरिश उन्हें कमज़ोर, अंतर्मुखी और अधीनस्थ बनाती है। साथ ही रीति-रिवाज़ और संस्कृति की भूमिका महिलाओं को चारदीवारी के भीतर रहने के लिए बाध्य करती है और उन्हें उनकी ज़िम्मेदारियों से बांधती है। उनकी ज़िम्मेदारियों में उनके परिवार द्वारा बनाए गए नियमों का पालन करना, अपने परिवार की पसंद के व्यक्ति से शादी करना और शादी के बाद बच्चों और पति की देखभाल करना आदि शामिल है। साथ ही घर के अंदर की उनकी शक्ति भी सीमित है। वित्तीय और आर्थिक संपत्तियों तक उनकी पहुँच उन्हें शादी के अंदर और बाहर नियंत्रित करती है। भ्रूण हत्या जैसी प्रथाएँ केवल लड़कियों के लिए ही प्रचलित हैं और हमेशा एक बेटे की चाहत रही है जो परिवार को आगे ले जाएगा और समृद्ध करेगा।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

एक बेटे को जन्म देने की इच्छा एक माँ की भी इच्छा होती है। बेटा एक सामाजिक स्थिति और परिवार के लिए सुरक्षा के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार यह माना जाता है कि बेटा माता-पिता की देखभाल करता है, लेकिन एक लड़की शादी कर लेती है और दूसरे परिवार में चली जाती है। ऐसे कई परिवार हैं जिनके पाँच से ज़्यादा बच्चे हैं और उससे भी ज़्यादा पैदा कार लेते हैं। लड़के की स्थिति लड़की से बेहतर है। वह घर में किसी तरह का काम नहीं करता, लेकिन लड़की बचपन से ही ज़िम्मेदारियों को निभाती है। उसे घर के काम करने के लिए कहा जाता है, हालाँकि उसे स्कूल से अपना काम पूरा करना होता है। अगर आर्थिक संकट है, तो लड़की की शिक्षा लड़के उतनी महत्वपूर्ण नहीं है। उसकी शिक्षा काट दी जाती है, लेकिन फिर भी लड़का लड़कियों की तुलना में बेहतर स्कूल जाता है। वह ऐसी स्थिति से तालमेल बिठा लेती है क्योंकि वह नहीं चाहती कि उसका परिवार कष्ट झेले, लेकिन लड़के को उसकी जीवनशैली में एक छोटा सा बदलाव स्वीकार करने के लिए भी नहीं पाला जाता। इस प्रकार एक लड़की को सभी कष्ट और संघर्ष सहने के बावजूद हर अधिकार से वंचित रखा जाता है।

'लाखों में एक' उपन्यास का सार

इति एक बहुत ही साधारण कड़की है। वह राजकुमारियों की तरह सुंदर नहीं है। इति का जन्म नौ लोगों के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था, जिसमें उसके माता-पिता, चार बहनें, एक भाई और एक दादी शामिल हैं। परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए कमाने वाला एकमात्र व्यक्ति उसके पिता हैं।

एक बार जब एक मेहमान ने उसका नाम पूछा तो उसने बताया। "कुछ सोचते हुए इति ने जवाब दिया 'अंकल, मेरे बहुत से नाम हैं। माँ कहती हैं भूतनी । दादी कहती हैं चुड़ैल। पापा कहते हैं काली माई। दीदी कहती हैं पगली। स्कूल का नाम है इति।"[3]

और इस घटना के कारण वह नाम के अर्थ के बारे में बहुत उत्सुक थी। उसकी शुचिता नाम की एक दोस्त है जिसके साथ वह अपने सारे दुख साझा करती है। उसने स्कूल में अपने दोस्त के साथ इस बारे में चर्चा की। जब वह घर पहुंची, तो उसने अपनी एक बहन से अपने नाम का अर्थ पूछा और अपने नाम का अर्थ सुनकर बहुत दुखी हुई। "दीदी ने गंभीर होकर कहा 'ऐसा है इति, तुम तो जानती ही हो

कि तुम हमारी पाँचवें नंबर की बहन हो। जब तुम पैदा हुई तो घर में सबने नाक-भौं सिकोड़ी। इसलिए तुम्हारा नाम रखा गया-इति। इति का का अर्थ होता है-समाप्ति। घरवालों ने यह नाम रखकर भगवान से मनाया था हे भगवान, बस बहुत हो चुका। अब लड़कियाँ देना समाप्त करो।"[4]

जब भी वह उदास और बुरा महसूस करती है, तो वह शुचिता की माँ से जाती है। और इस प्रकार शुचिता की माँ का यह स्वभाव उसे अपने परिवार में समस्याओं का सामना करने पर उनके पास जाने के लिए प्रेरित करता है। एक बार जब उसकी बहन रूपा को बुखार हुआ तो उसका घर पर ही इलाज किया गया क्योंकि इसमें बहुत पैसा खर्च हो सकता था। लेकिन जब उसके भाई को हल्का बुखार हुआ, तो उसे इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया। जब वह ठीक हो गया, तो शेष गोलियां रूपा को दे दी गईं क्योंकि वे उन गोलियों को बर्बाद नहीं करना चाहते थे। लेकिन रूपा की हालत बिगड़ती गई। उसे बेहोश होने के बावजूद डॉक्टर के पास नहीं ले जाने दिया गया। शुचिता की माँ ने रूपा को अस्पताल ले जाने का प्रबंध किया और उसकी जान बचाई । कुछ ही दिनों में इति के पिता की नौकरी चली गई क्योंकि जिस फैक्ट्री में वे काम करते थे वह दिवालिया हो गई। "कुछ देर चुप रहने के बाद पापा ने बताया कि उनकी नौकरी छुट गई है। उनके मालिक की जूतों की फैक्टरी का दिवाला पिट गया है। कल से कहीं काम पर नहीं जाना है।"[5]

इससे घर की स्थिति और खराब हो गई। इससे उनकी बुनियादी ज़रूरतें भी पूरी नहीं हो पा रही थीं। लेकिन भाई गौरव इन बदलावों से खुश नहीं था। वह अब भी पहले की तरह ही जीना चाहता था। अब उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं थे। हालात को देखते हुए इति मदद के लिए शुचिता के घर गई। शुचिता की माँ ने छोटी लड़की को अंशकालिक नौकरी दिलवाई जिससे उसका परिवार चलता था। "हमारे यहाँ छोटी-छोटी कई लड़कियाँ काम करती हैं। वे अपने नन्हें-नन्हें हाथों से जंजीर में कुन्दे जोड़ती हैं। करीब तीन चार घंटे काम करके पाँच-छः रुपये रोज कमा लेती हैं।' आँटी ने सहानुभूति भरी आवाज में बताया।"[6]वह स्कूल के बाद काम करती थी। एक बार जब वह अपनी मेहनत की कमाई लेकर घर लौटी तो एक बुरी खबर उसका इंतज़ार कर रही थी। उनके माता-पिता ने पारिवारिक स्थिति के कारण लड़कियों की पढ़ाई बंद करने का फैसला किया। इससे इति का दिल टूट गया। "कुछ ही देर

में पापा घर आये। उन्होंने एक और दुःखद हुक्म दे डाला 'कल से कोई लड़की स्कूल नहीं जायेगी। मेरे पास किसी की फीस जमा करने के लिए पैसे नहीं हैं।"[7]

वह अपने जीवन में बहुत कुछ हासिल करना चाहती थी। उसके भाई की पढ़ाई जारी रही क्योंकि उसके माता-पिता को विश्वास था कि भविष्य में वह उनकी देखभाल करेगा। यह सब सहने के बाद भी इति ने काम करना जारी रखा। लेकिन इति का भाई जीवन से खुश नहीं था। उसने आइसक्रीम के लिए 5 रुपये माँ गे, लेकिन वे इसे वहन नहीं कर सके। उसकी माँ ने उसे ऐसा व्यवहार करने के लिए डांटा। गौरव परेशान हो गया और घर छोड़ दिया। कुछ समय बाद वह कहीं नहीं मिला। पूरे परिवार ने खोज की और उसे खोजने में असमर्थ रहे। सप्ताह बीत गए और इति ने शुचिता के घर जाने का फैसला किया। लेकिन शुचिता की माँ उसकी माँ की देखभाल करने के लिए शहर से बाहर गई हुई थी। वह 15 दिनों के बाद ही वापस आएगी। शुचिता ने गौरव की गुमशुदगी की खबर प्रकाशित करने के लिए अपने गुल्लक को तोड़कर और पैसे देकर उसकी मदद की। खबर के बारे में कोई अद्यतन नहीं था। 15 दिनों के बाद, शुचिता की माँ आई पर वे गौरव को अपने साथ ले आई। किसी ने गौरव को अकेला देखकर उसे गुमराह किया होगा और उसे बाल श्रम के लिए बेच दिया होगा। उसने घर को कहानी बताई। उसने गौरव को हरिद्वार में पाया, जहाँ वह खाना खाने के लिए रुकी थी। "इस प्रकार परिवार की स्थिति बेहतर हो गई और गौरव को घर के खाने का महत्व समाज गया। थोड़ी देर बाद हँसी-खुशी से सब लोग घर लौट आये। चूंकि पापा अब अखबार के दफ्तर में काम करने लगे थे, इसलिए घर में पहले जैसी गरीबी न रही थी। गौरव अपने घर की बदली हालत देखकर बहुत खुश हुआ।"[8] वे हर भाई-बहन के साथ समान व्यवहार करने लगे।" फिर मुस्कराकर बोला'अपनी इति पर मैंने एक कविता बनाई है माँ। सुनो -

'इति है नेक, लाखों में एक।
उस पर बारो, गौरव अनेक।"[9]

मध्यवर्गीय परिवार

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

इति का परिवार मध्यम वर्ग का है और 9 लोगों के परिवार में इति के पिता के लिए पूरे परिवार की देखभाल करना मुश्किल हो जाता है। इन सभी को चलाने में उन्हें पारिवारिक आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। यहां तक कि जब इति शुचिता की जन्मदिन की पार्टी में गई तो उसने एक सुंदर पोशाक पहनी हुई थी। लेकिन जब वह शुचिता के घर में दाखिल हुई तो उसे उत्सव, भोजन और अन्य लोगों को देखकर अजीब लगा और वह भीड़ में खो गई। “इतनी शान-शौकत से किसी लड़की का जन्मदिन मनाया जाना उसने पहली बार ही देखा था। अपनी गरीबी की वजह से वह अपने आप ही झिझकती रही। कुछ देर बाद सब लोग स्वादिष्ट पकवानों पर हाथ साफ करने लगे। मोमबत्तियाँ बुझाने और केक काटने की रस्म पूरी जो हो चुकी थी। पर इति तब भी झेंपती हुई एक कोने में खड़ी रही।“[10]

साथ ही जब उसकी बहन रूपा को तेज बुखार हुआ तो उसका ठीक से इलाज नहीं किया गया यह सोचकर कि यह सिर्फ एक सामान्य बुखार है और वह एक लड़की है। यहां तक कि जब वह बेहोश हो गई तो इति की माँ और दादी ने पिता से परामर्श करना चाहा लेकिन जब गौरव को हल्का बुखार हुआ तो उसी दिन उसकी सलाह ली गई। गौरव के लिए दी गई गोलियां रूपा को उसके ठीक होने के बाद दी गईं क्योंकि वे उन्हें बर्बाद नहीं करना चाहते थे।“ऐसा करो बहू, दवा के पैसे तो अब लग ही गये है। इसलिए यह दवा तुम रूपा को खिला दो। यह बेचारी दो दिन से बुखार में पड़ी है। जल्दी अच्छी हो जायेगी।' -दादी ने खुद को अक्लमंद समझते हुए राय दी।“[11]

वे अपनी जरूरतें भी पूरी नहीं कर पा रहे थे। शुचिता की माँ की मदद से रूपा को अस्पताल में भर्ती कराया गया। इति की त्वरित सोच से उसकी जान बच गई। इति के पिता ने उससे पूछा कि जब उसने रूपा की जान बचाई तो वह क्या बनना चाहती है और उसने कहा कि वह डॉक्टर बनना चाहती है। इसे सुनकर वह खुश था, लेकिन पिता को इसके पीछे की कीमत के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया।

“लेकिन डाक्टरी की पढ़ाई का खर्च तो....' -पापा की आवाज लड़खड़ा गई।“[12]

ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

इस प्रकार मध्यम वर्गीय जीवन जीने वाले इति के परिवार को अपनी दैनिक ज़रूरतों को पूरा करने और अपने सपनों और इच्छाओं को पूरा करने में भी मुश्किल होती है।

आवश्यकताओं की पूर्ति

इति का परिवार पहले से ही आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। लेकिन जब इति के पिता की नौकरी चली गई, तो स्थिति और खराब हो गई। उनके पास जो पैसे थे, वे केवल भोजन और दवा जैसी दैनिक ज़रूरतों पर खर्च हो रहे थे। वे उस तरह से नहीं रह पा रहे थे जैसे उनके पिता की नौकरी के दौरान हुआ करते थे। उन्होंने सुखी रोटी खाना शुरू कर दिया। घर की लड़कियों ने तो स्थिति के हिसाब से खुद को ढाल लिया, लेकिन छोटे भाई ने इस बदलाव को स्वीकार नहीं किया क्योंकि उसे घी, फल और ताज़ी रोटी खाने की आदत थी। लेकिन जब आर्थिक संकट और भी बढ़ गया, तो परिवार ने लड़कियों की पढ़ाई बंद करने का फैसला किया। इति की सभी बड़ी बहनें इस स्थिति से सहमत थीं। पर बाकी सारी बहनें पढ़ाई छूट जाने की खबर से खुश थीं।

“दीदी बोली'अब मजे आये। मेरी पढ़ाई आठवाँ पास करते
ही छुड़ा दी गई थी। अच्छा हुआ, अब सबको घर बैठना पड़ेगा।'

'मुझे तो वैसे भी स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था।' गीता कंधे उचकाते हुए बोली-'एक-एक किताब कॉपी के लिए पैसे माँगने पर डांट खानी पड़ती थी।'
'दूसरी लड़कियाँ घुले और इस्तरी किये हुए कपड़े पहनकर आती थीं। हमारे घर में कपड़े धोने के लिए साबुन माँगने पर डांट पड़ जाती थी। अब चाहे जैसे मैले कुचले कपड़े पहनकर घूमूँगी, शरम तो नहीं आयेगी।' दीपा ने मुँह बनाते हुए कहा। 'मैं तो अभी वैसे भी कमजोरी की वजह से पैदल स्कूल जाने में थक जाती थी। अब खूब आराम किया करूंगी।' रूपा लापरवाही से बोली।“[13]

लेकिन इति इस बात को पचा नहीं पा रही थी कि गौरव को स्कूल जाने की अनुमति दी गई, जबकि वह पढ़ाई में अच्छा नहीं था। उसे उनसे बेहतर स्कूल में जाने की अनुमति दी गई। लेकिन इति जो डॉक्टर बनने की प्रेरणा दे रही थी, उसकी शिक्षा रोक दी गई। उससे यह भी पूछा गया कि अगर वह डॉक्टर बनना चाहती थी तो ऐसे परिवार में क्यों पैदा हुई। “डाक्टर ही बनना था तो इस गरीब आदमी के घर क्यों पैदा हुई थीं?' पापा ने कहा और तकिये में मुँह गड़ाकर लेट गये।“[14]

सभी स्थितियों का निरीक्षण करते हुए, वह अपने माता-पिता की मदद करना चाहती थी। वह मदद के लिए शुचिता की माँ के पास गई, जिसके परिणामस्वरूप उसे एक कारखाने में अंशकालिक नौकरी मिल गई और उसके बाद उसका स्कूल बंद हो गया। उसने उसे बताया कि वह शाम को पढ़ाई के लिए शुचिता के घर जा रही है, लेकिन वास्तव में वह वहाँ काम करने गई थी। जब इति की माँ को पता चला कि उसकी बेटी परिवार के लिए काम कर रही है, तो वह बहुत दुखी हुई। "कांपती आवाज में बोली 'मेरी इति, मेरा हीरा मोती। तू जुग जुग जिये बिटिया। मुझे सचमुच तुझ पर गर्व है। गौरव तो सिर्फ नाम का गौरव है। हमारा असली गौरव तो तू ही है।"[15]

परिवार की लड़कियाँ हमेशा परिवार का समर्थन करती थीं, लेकिन दूसरी तरफ गौरव घर में होने वाले बदलावों को बर्दाश्त नहीं कर सका। वह आइसक्रीम के लिए 5 रुपये माँगता रहा। लेकिन जब उसकी माँ ने उसे ऐसा करने के लिए डांटा, तो वह घर छोड़कर चला गया। पर जिसकी अपेक्षा की गई है कि वह परिवार का सहारा बन गई है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में, लैंगिक समानता लोगों के मन में फैली हुई है जो घर से लेकर किसी भी कार्यस्थल तक जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। हालाँकि इसे मिटाने के लिए अधिक से अधिक नीतियाँ बनाई जा रही हैं, लेकिन इसे केवल हमारे व्यक्तिगत प्रयासों से ही मिटाया जा सकता है। पर हम उम्मीद नहीं खो सकते क्योंकि हमारे पास ऐसे पिताएं हैं जो अपनी बेटियों को अपने बेटे की तरह ही शिक्षित करते हैं और उन्हें उनकी शिक्षा और काम के लिए जगहों पर जाने की अनुमति देते हैं। हमें अगली पीढ़ी के प्रतिनिधियों कोई भेदभाव नहीं दिखाना चाहिए क्योंकि महिलाओं ने पुरुषों के साथ हर क्षेत्र में धमाके के साथ प्रवेश किया है।

संदर्भ :

[1] https://www.yourdictionary.com/articles/childrens-literature-themes

[2] https://atmospherepress.com/diverse-themes-in-childrens-literature/

[3] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 23

[4] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 25

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 5
September- October: 2025

[5] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 47

[6] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 49

[7] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 50

[8] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 72

[9] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 73

[10] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 31

[11] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 39

[12] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 45

[13] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 50, 51

[14] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 50

[15] उषा यादव, लाखों में एक, 11 बाल उपन्यास (भाग -2), वर्षा प्रकाशन, 2008, पृष्ठ सं – 54